

SHRI MURLIKANT RAJARAM PETKAR

Shri Murlikant Rajaram Petkar holds the absolute honour of being India's First Paralympic Gold medallist, a medal he bagged in 50 Mt Freestyle Swimming. He achieved this incredible feat at the Summer Paralympics held at Heidelberg, Germany in August 1972. It was during this same event that he also set a new world record in Freestyle Swimming, reaching the finish line in an astounding 37.33 seconds.

2. The seeds of this brilliant sportsman born on November 1, 1947 at Peth lslampur, in Sangli District, Maharashtra were sown at a very young age during his schooling years, where Shri Petkar excelled at multiple sports like wrestling, hockey and athletics. Even as a young candidate in the Boys Battalion of the Indian Army he soon established himself as a strong sportsman and was chosen to represent India in Boxing at the International Services Sports Meet held at Tokyo in 1964.

3. Following his tryst with war, Shri Petkar never looked back. Throughout his career he participated in events like the Stoke Mandeville International Paraplegic Meets held in England where he consistently outdid his own records and won the General Championship Cup for 5 consecutive years (1969-73); the 3rd Commonwealth Paraplegic Games held at Edinburgh, Scotland where he bagged Gold in 50 Mt Freestyle Swimming, Silver in Javelin Throw and Bronze in Shot-put; the Gold in 50 Mt Swimming and Bronze in Short Put at the International FESPIC Games in Hong Kong in 1982 are significant among other achievements.

4. The Summer Olympics of Germany were a highlight of a life that can only be described as that of the most brilliant adventures and determination. Shri Petkar's sporting career saw an unprecedented progress after a brutal injury through which he battled with persistence and bravery. While posted in Sialkot sector (J&K) as a part of the Indian Army, he found himself on the onset of the Inda-Pakistan war of 1965. He sustained grave injuries including multiple gunshot wounds and a loss of memory and as a horrific reminder of the incident, still has a bullet lodged up his spine. In a condition where his future seemed bleak with uncertainty, he emerged a hero and made significant recovery to compete in the 1967 State Athletic Meet where he became the Maharashtra State Champion in Shot Put, Javelin Throw, Discus Throw, Table Tennis and Archery. And the graph of his success only rose from then on.

5. A number of awards have been conferred upon Shri Petkar to recognize his exceptional and extensive contribution to sports in India. Among these is Maharashtra's highest sporting award, the Shiv Chhatrapati Award, awarded to him in 1975 by Nawab Ali Yawar Jung, then Governor of Maharashtra and the Raksha Medal in 1965.



श्री मुरलीकांत राजाराम पेटकर

श्री मुरलीकांत राजाराम पेटकर को भारत के सर्वप्रथम पैरालम्पिक्स स्वर्ण पदक विजेता होने का असीम गौरव प्राप्त है, वह पदक जो आपको 50 मीटर की फ्री स्टाइल तैराकी में मिला। आपको यह असाधारण जीत अगस्त 1972 में हेडलबर्ग, जर्मनी में आयोजित ग्रीष्मकालीन पैरालम्पिक्स में प्राप्त हुई। इसी प्रतियोगिता के दौरान आपने समापन रेखा पर आश्चर्यजनक रूप से 37.33 सैकेण्ड में पहुंचकर फ्रीस्टाइल तैराकी में एक नया विश्व रिकॉर्ड बनाया।

2. 1 नवबंर, 1947 को पेठ इस्लामपुर, सांगली जिला, महाराष्ट्र में जन्मे आप जैसे होनहार खिलाड़ी में यह कौशल युवास्था में ही प्रस्फुटित हो गया था। अपने स्कूली वर्षों के दौरान आपने कई खेलों जैसे कुश्ती, हॉकी और खेलकूद में बढ़-चढ़कर भाग लिया। भारतीय सेना की ब्वॉज बटालियन के युवा केंडिडेट होने पर भी आपने जल्द ही स्वयं को एक सुदृढ़ खिलाड़ी के रूप में स्थापित कर लिया और वर्ष 1964 में टोक्यो में हुई अंतर्राष्ट्रीय सेवा खेल प्रतियोगिता में मुक्केबाजी में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए आपका चयन किया गया।

3. युद्ध की नियति के पश्चात आपने कभी पलट कर नहीं देखा। अपनी जीवन यात्रा के दौरान आपने इंग्लैंड में होने वाले स्टोक मेनडेविल इंटरनेशनल पैराप्लेजिक मीट में भाग लिया जहां आपने लगातार अपने ही रिकॉर्ड तोड़े और लगातार 5 वर्षों (1969-73) के लिए जनरल चैम्पियनशिप कप जीता; एडिनवर्ग, स्कॉटलैंड में आयोजित तीसरे राष्ट्रमंडल पैराप्लेजिक खेल में आपने 50 मीटर फ्री स्टाइल तैराकी में स्वर्ण पदक जीता; जेवलाइन थ्रो में रजत पदक तथा शॉटपुट में कॉस्य पदक जीता, 1982 में हांगकांग में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय एफ ई एस पी आई सी खेल में 50 मीटर तैराकी में स्वर्ण पदक तथा शॉटपुट में कांस्य पदक जीता। ये आपकी अन्य उपलब्धियों में से कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियां रहीं।

4. जर्मनी के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक आपके जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से है जिसे आपके सर्वोत्तम साहसिक कार्य और दृढ़ संकल्पता के रूप में वर्णित किया जा सकता है। आपका खिलाड़ी के रूप में कैरियर आपको लगी गंभीर चोट के बाद बेमिसाल रूप से उन्नत हुआ। इस हादसे से आपने बहुत ही दृढ़ाग्रह और साहसिक रूप से जंग लड़ी। भारतीय सेना के कार्मिक के रूप में जब आपकी तैनाती सियालकोट क्षेत्र (जम्मू और कश्मीर) में हुई, वहां आपको 1965 में भारत-पाकिस्तान युद्ध का सामना करना पड़ा। आपको गंभीर चोटें लगीं जिसमें आपको कई गोलियां लगी और आपकी याददाश्त भी चली गई थी। इस घटना की भयावह याद के रूप में आपके मेरुदंड में एक गोली आज भी अटकी हुई है। ऐसी स्थिति में जहां आपका भविष्य अनिश्चितताओं के कारण शून्यतुल्य लगने लगा था, आप एक शूरवीर की तरह उभर कर आए और 1967 में राज्य खेलकूल प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए स्वयं को पूर्णत: तैयार किया जहां आप शॉटपुट, जेवलिन थ्रो, डिस्कल थ्रो, टेबल-टेनिस और तीरंदाजी में महाराष्ट्र स्टेट चैम्पियन बने। और इसके बाद आपकी सफलता का ग्राफ ऊपर उठता चला गया।

5. भारत में खेल-जगत को आपके द्वारा दिए गए अतुलनीय तथा व्यापक योगदान को महत्व देते हुए आपको कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इनमें महाराष्ट्र का सर्वोच्च खेल पुरस्कार, शिव छत्रपति पुरस्कार जो कि आपको 1975 में महाराष्ट्र के तत्कालीन राज्यपाल नवाब अली थावर जंग द्वारा प्रदान किया गया तथा 1965 में रक्षा पदक भी शामिल है।